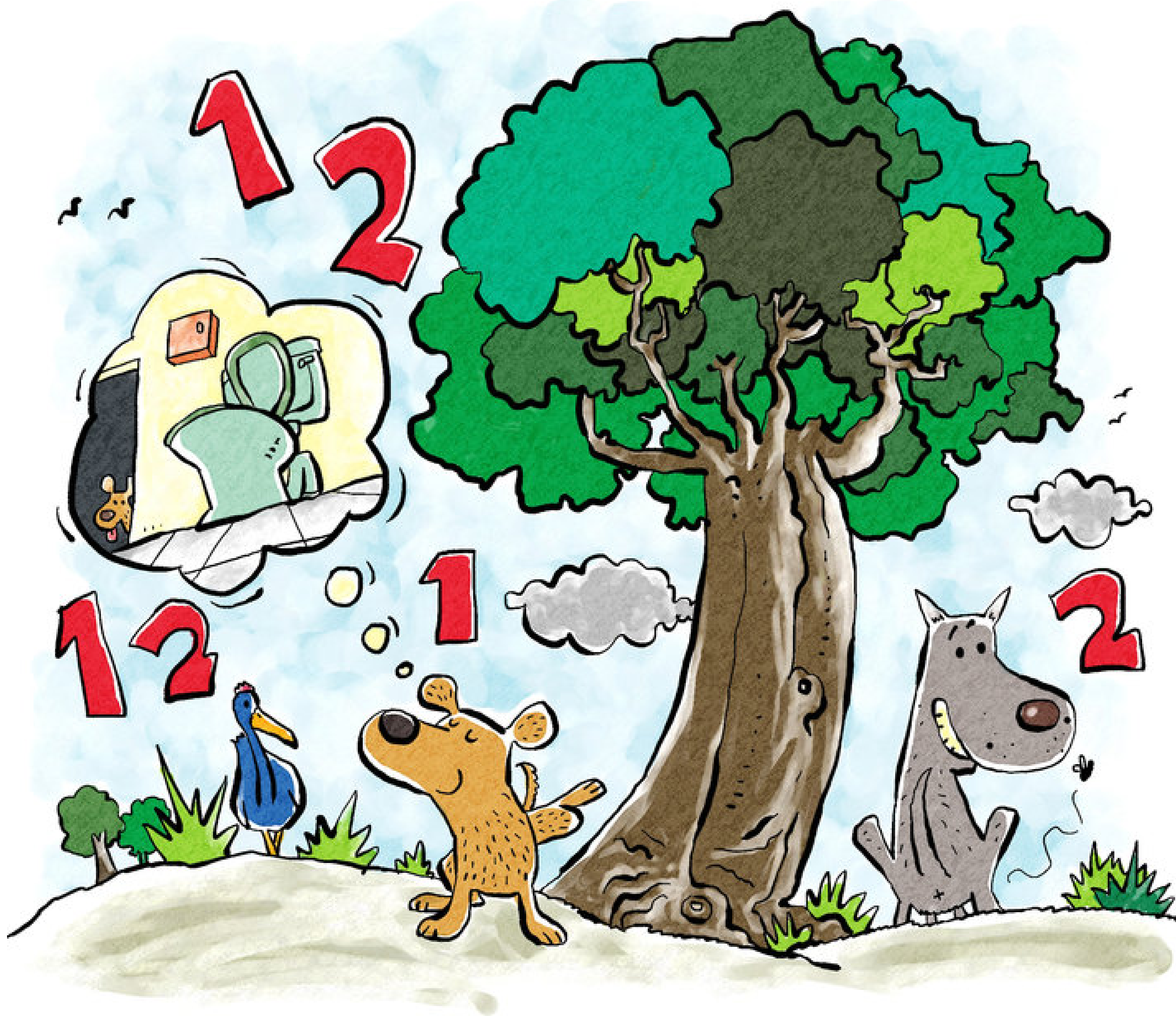


PRATHAM BOOKS

शौचालयक खिस्सा

Author: Veena Prasad
Illustrator: Greystroke
Translator: Kiran Choudhary

Level 4



पैघ काज त पैघ होइते अछि, ओकरा जोर के सामने कोनो आन के जोर नहि चलैत छैक! छोट काज दोसर स्थान पर जरूर अबैत अछि, परञ्च ओकर महत्व कम नहि कहि सकैत छी। तात्पर्य ई जे जखन जाइक होइत छैक तँ जाइये पड़ैत छैक! देह मे बाँचल गंदगी के निकास हेतु प्रकृति दबाब बनबैत छैक आ ओकरा अनसुनी नहि कएल जा सकैत अछि!

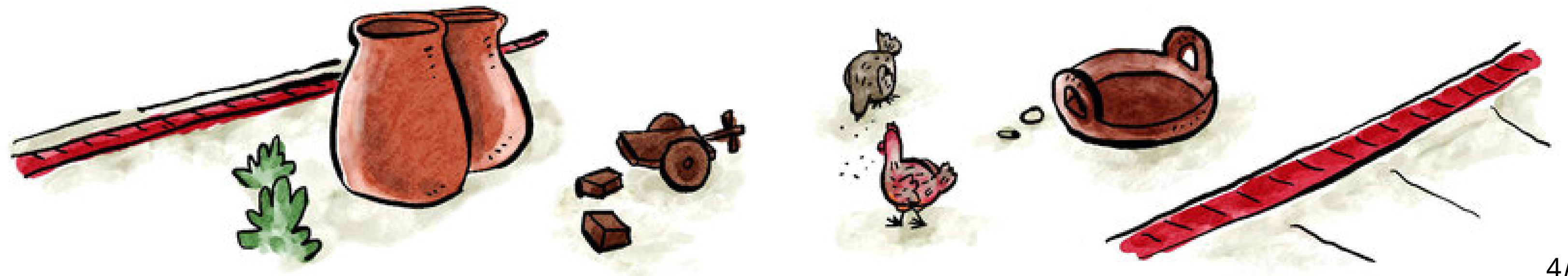
किछु लोक अपन घरे मे निबटा लैत छथि आओर किछु कैँ बाहर जाय पड़ैत छनि। किछु काज भेलाक बाद जलक प्रयोग कs परिष्कृत होइत छथि आओर किछु कैँ जलक प्रयोजने नहि होइत छनि। इतिहासक अलग अलग समय मे संसारक अलग अलग भाग मे किछु अलगे तरीका सब रहल अछि।



अतीतक शौचालय

बहुत पुरान बात अछि, 3000 सालो से पहिले , सिंधु घाटी के लोक सभक गृह बहुत सुंदर छलनि जाहि मे घरेक अन्दर शौचालय छल। लोक बिल्कुल एकान्त मे अपन काज निबटा लैत छलाह आ बाल्टी भरि जल उड़ेल कS गंदगी के नाली मे बहा दैत छलाह। एहि तरहेँ ओ लोकनि , अपन घरो के संगहि सडको के साफ सुथरा रखैत छलाह।

आजुक भारत ओ पाकिस्तान मे जे सिंधु घाटी सभ्यताक शुरुआत भेल, संसारक तीन सब सँ पुरान सभ्यता मे सँ एक छल। आ बांकी दू सभ्यता मिस्र वो मेसोपोटामियाक छल।
सिंधु घाटी सभ्यता अंतर्गत जे खंडहर हमरा सभ के भेटल अछि एहि सँ ई बोध होइत अछि जे ओ लोकनि बड़का बड़का मकान ओ इमारत बनेबा मे धुरंधर छलाह आ संगहि धातुक ओ भट्ठी मे पकायल माटि सँ चीज सब तैयार करै मे सेहो। सँगे संग ओ लोकनि शहर भरिक गंदगी भरल जल सँ छुटकारा पाबैक लेल बड्ड सूझ बूझ के प्रयोग करैत नाला - नाली के जाल बिछेने छलाह।





ओहि दौर मे संसारक दोसरो भाग मे सेहो शौचक हेतु एहने मिलैत जुलैत व्यवस्था छल। मिस्त्र तथा बेबिलॉनियाक घर सभ मे सेहो शौचालय घरक भीतरे होइत छल।
स्कॉटलैंड केर ' स्कारा ब्रे' आओर भूमध्य सागर इलाका मे 'मिनोअन क्रीट' केर घर सभक खंडहर मे एहने नाला सब निकलैत देखबा मे अबैत अछि। ई सभ देखि लगैत अछि जे शौचालय घरक अन्दरे होइत होयत।

ओकर किछु समय उपरान्त, प्राय: 2000 वर्ष पहिले, रोम के लोक सार्वजनिक शौचालयक प्रयोग करैत छलाह। एक नमहर पाथर केर चबुतरा मे थोड़े थोड़े दूर पर मोख जकाँ छेद काटल रहैत छलैक जेना कि ताला मे चाभी लेल छेद रहैत छैक।
लोक सभ एहि मोख पर बैस बगल के लोक सभ सँ गप्प सप्प सेहो करैत छलाह संगहि शौचो क्रिया सँ निपटैत छलाह। हम कहलौं ने जे शौचालय "सार्वजनिक "होइत छल।



आब अहाँ सोचैत होयब जे शौच क्रिया उपरान्त ओ सभ सफाई कोना करैत हेताह? हमरा द्वारा ओ सभ बतेलाक बाद भ सकैत अछि जे अहाँ सभ के होइत हैत जे कदाचित ई सभ प्रश्न नहि पूछल जाइछ।

एक नमहर सन छड़ी होइत छल, जकर अगिला हिस्सा पर गदगर स्पॉन्ज लागल होइत छल। स्पॉन्ज बला हिस्सा के तसला मे राखल जल मे डुबा ,शौच क्रिया उपरान्त पाँछा मे लागल गंदगी के साफ करैत छलाह। अपन साफ केलाक बाद फेर ओ छड़ी दोसर पड़ोसी के द देल जाइत छल सफाईक उपयोग हेतु आ ओ सेहो ओही तरहेँ ओकरा जल मे डुबा सफाई करैत छलाह। अहाँक बास्ते एक टा हमर नीक सलाह अछि जे जहिया कहियो अपना आप के ओहेन जगह पर पाबी तँ पहिल सीट पर बैसब।

रोम मे सभ कियो के ओहेन जगह पैखाना करैक लेल नहि जाय पड़ैत छलैक। जे बड़का रईस होइत छल ओ अपनहि घर मे एक टा ओहेन बर्तन रखैत छल जाहि मे ओ शौच क्रिया क सकैत छल। शौच क्रिया करैक उपरान्त, बर्तन के बाहर सड़क पर खाली क देलनि, इएह करैत छलाह। आब अगर ओही समय मे जँ कियो सड़क सँ घुरलाह तँ ओ हुनकर भाग्यक दोष!
प्रायः 500 वर्ष पूर्व, इंग्लैंडक महारानी एलिज़ाबेथ अपन घर मे शौचालय बनबौने छलीह। ओहि मे एक टा पाइप होइत छल जे बाहर बनल एक खैध सँ जुड़ल रहैत छल। ओहि खैध मे शौचालयक मल बहि के जाइत छल। परञ्च ओ एहि शौचालयक अधिक उपयोग नहि क सकलीह कारण सीवर से अबै बला दुर्गन्ध सँ शौचालय भरि जाइत छल जाहि सँ साँस लेनाइ कठिन। फेर की छियैक, ओ फेर सँ पात्र बला पद्धति पर आबि गेलीह।

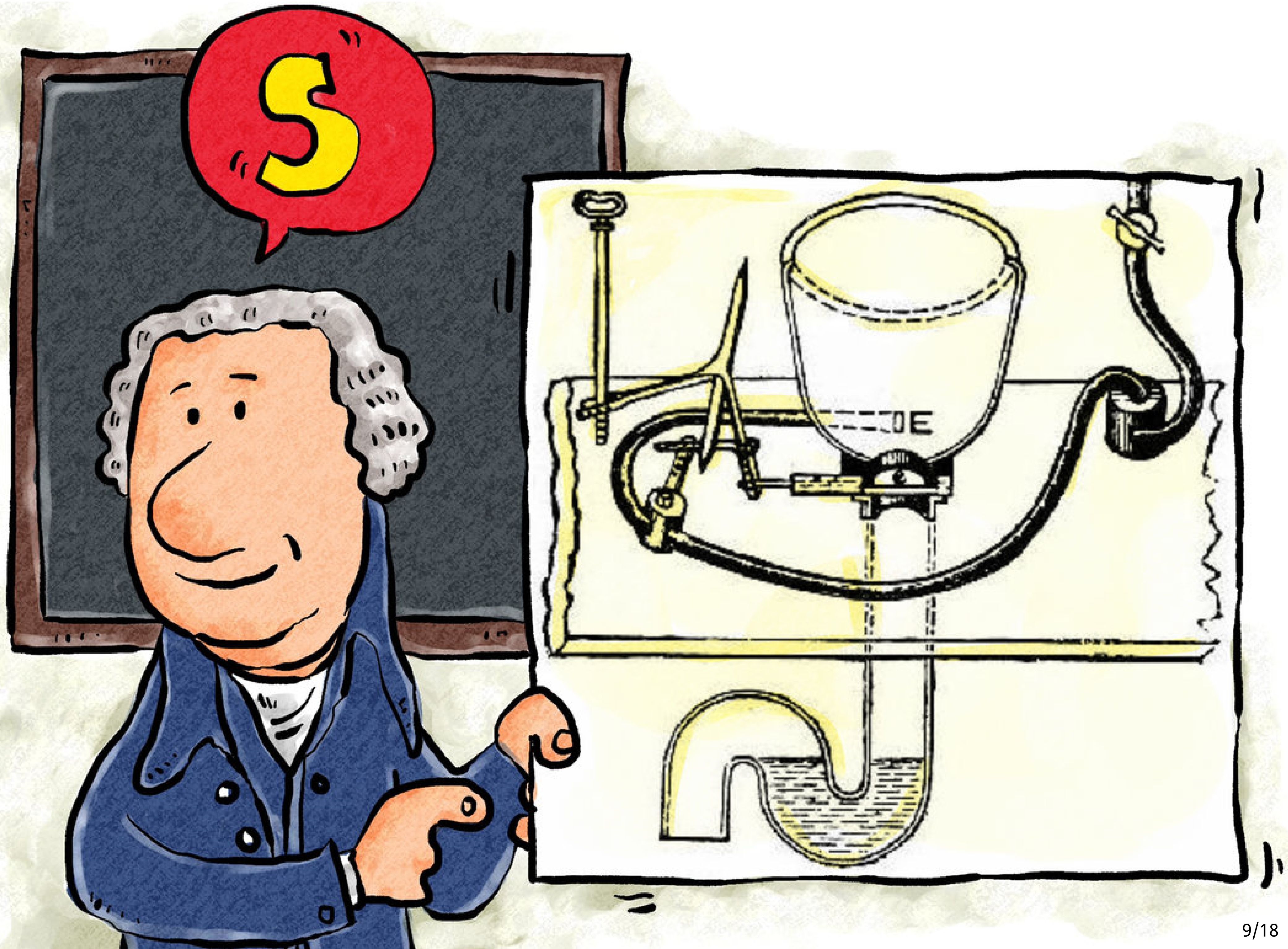




आइ -काल्हिक शौचालय

आइ-काल्हिक शौचालय मे दुर्गन्ध नहि अबैत अछि। ई केना संभव भs सकल हेतैक।

1775 मे, अंग्रेज अविष्कारक अलेक्जांडर कमिंग ओकर तरीका तकलनि।सीवेज लाइन सँ जोड़ैक लेल ओ सीधा पाइप के स्थान पर ओ अंग्रेजीक अक्षर 'स' आकृति के पाइप के उपयोग केलनि। एहेन कएला सँ मल-मूत्र आ गंदा पानि त पाइप सँ निच्चा चल जाइत छैक, परञ्च दुर्गन्ध ऊपर तरफ कथमपि नहि आबि सकैत छैक। अपने सब ध्यान देने हेबैक जे 'टॉयलेट' मे फ्लश केलाक बादो, हरदम थोड़ेक पानि भरले रहैत छैक।इएह पानि दुगर्न्ध के ऊपर अबै सँ रोकैत छैक अर्थात 'सील' के काज करैत छैक।


S
DE



ठीक पुरान जमाना जकाँ,एखनो संसार के अलग अलग भाग मे अलग अलग शौचालय होइत अछि।

कोनो कोनो जगह त शौचालय होइते नहि अछि। कतउ कुर्सी जकाँ बैसइ के व्यवस्था रहैत छैक आ कतउ बैसइ मे उकरु होइत छैक। कतउ ' फ्लश' हेतु जल सँ भरल बाल्टी रहैत अछि आ कतउ पानि सँ भरल टंकी रहैत छैक जकर 'हैंडल' घुमेला सँ अथवा जिज्जिर खिंचला सँ 'फ्लश' लेल पानि निकलैत छैक। कतउ शौच क्रियाक उपरान्त कागज सँ पोछि कs सफाइ कएल जाइत अछि आ कतउ बाल्टी मे भरल पानि सँ वा नल सँ धोल जाइत अछि।

किछु शौचालय ओहेन होइत अछि जे ओहि मे जल के प्रयोग होइते नहि अछि, जेना कि हवाई जहाज मे। उड़ानक समय होइ बला हलचल के कारणे कियो ई चाहतैक जे ' टॉयलेट पॉट, जल नहि भरल होइक। जहाज मे एक शक्तिशाली ' वैक्यूम' होइत अछि जे मल के निच्चा बनल टैंक मे खसा दैत छैक। हवाई जहाज जखन निच्चा उतरैत छैक, तखन ओ टंकी खाली क देल जाइत छैक। जमीनो पर बिना पानि वला 'टॉयलेट' होइत छैक। ओ ओहेन ठाम बनायल जाइत अछि जतय पानि के अभाव अछि, जेना कि तमिलनाडू ओ महाराष्ट्र के दूर दराजक गाम मे। ई बढियाँ जकाँ काज क रहल छैक, त कियैक नहि आनो ठाम ओहने शौचालय बनाओल जाय? कारण हम सब जतेक कम जलक उपयोग करबैक 'सीवेज' सेहो ओतवएक कम हेतैक आ हमर धरती ओतवएक सुन्दर भs जायत। बात सही छैक नै?





भविष्यक शौचालय

जल रहित शौचालय कोना बनैत अछि?

सर्वप्रथम ई ध्यान रखैक होइत छैक जे मल आ मूत्र अलग रहैक। ई ओतबो गंदगी भरल काज नहि जतबा सुनै मे लगैत अछि - बस 'टॉयलेट पॉट' सोचि - विचारि 'डिज़ाइन' करैक होयत। जेना कि बाँसक एक चटाई जे जालीनुमा ढलान स्वरूप मे रहत आ ओहि सँ पानि तथा पेसाब बहि जाय संगहि मल एक अलग खधिया मे चलि जाय।

स्वयँ पेसाब सँ कोनो हानि नहि होइत अछि (पेसाब पर जमा होइ वला बैक्टीरियाक कारणे दुर्गन्ध तथा गंदगी पसरैत अछि,) तें हेतु ओकरा जमीन में जायल देल जा सकैत अछि, या फेर ओकरा उपयोग मे आनल जा सकैत अछि। उपयोग केना? हम बतबैत छी-पेसाब सँ 'हाइड्रोजन' अलग क ओकरा इंधन रूप में उपयोग कएल जा सकैत अछि।

पेसाब मे 'नाइट्रोजन', 'फॉस्फोरस', आओर 'पोटासिम' सेहो रहैत अछि जे खादक काज करैत अछि।

एहि तरहेँ पेसाबक ठेकान लगेलाक बाद, ठोस मल के की कएल जाय? जँ मल के बढियाँ जकाँ छौर आ घास फूसक संग मिला कs खधिया मे पड़ल रहल देल जाय तँ करोड़ो 'बैक्टेरिया' किछु समय मे ओकरा बढियाँ जैविक खाद मे बदलि देत जे खेती लेल बड्ड काजक होइत अछि।





ई शौचालय हमरा सभ के ओहेन साफ सुथरा संसार बनबै मे सहायक होयत जतय मल त बेकार नहिये होयत अपितु एक फायदा बला चीज मे बदलि देल जायत।

अगर कोनो शहर मे, सभ घर मे ओहेन शौचालय हो जकरा सँ कोनो 'सीवेज' बाहर नहि निकलैत होय, बड़का बड़का महग 'सीवेज प्लांट' के जरूरते नहि पड़त संगहि नाला सब होइत जे 'सीवेज' नदी और झील मे चल जाइत अछि से नहि जायत। नदी और झील सब गंदा होइ सँ बचि जायत। कदाचित ओ सभ भs जाइत अछि तँ सभक भविष्य सँवरि जायत।





हम पृष्ठ-18 पर लूडो और साँप -सीढ़ी तरहक एक खेला द रहल छी। बस किछु दोस्त लोकनि के जमा करू, एक पासा ल खेलेनाइ शुरू करू। निच्चा देल गेल निर्देश सभ सँ अहाँ सभ के खेलाइ मे मदद भेटत।

3 पर

रानीक मल पात्र, रानीक पात्रक अवैध उपयोग।
सजा: 2 बेर लेल ओही शौचालय मे पड़ल रहू।

6 पर

रोम केर टॉयलेटक पहिल सीट: गनीमत अछि!
पहिल स्पॉन्ज हमरे भेटत! 7 खाना आगाँ बढि जाऊ!







9 पर
शौचालय लेल पाँति मे अटकि गेलउँ!
2 अथवा 4 आयला पर आगाँ बढ़ू।

12 पर
रोमक 'टॉयलेट' केर अंतिम सीट:
छी-छी! नै चाही ई स्पॉन्ज?
तँ, बैसल रहू। एक बेर छोरू।

15 पर
मोहनजोदड़ो:
वाह!अहाँ संसारक सबसे बढियाँ 'टॉयलेट' मे पहुँचि गेलहुँ। एक बेर आर पासा फेकू। जँ 2, 4,6 आयल तँ ओतेक खाना और बढ़ू। जँ 1,3,5 आयल तँ दोसर केर पासा के ओतेक खाना पाँछा धकेल दियौक।



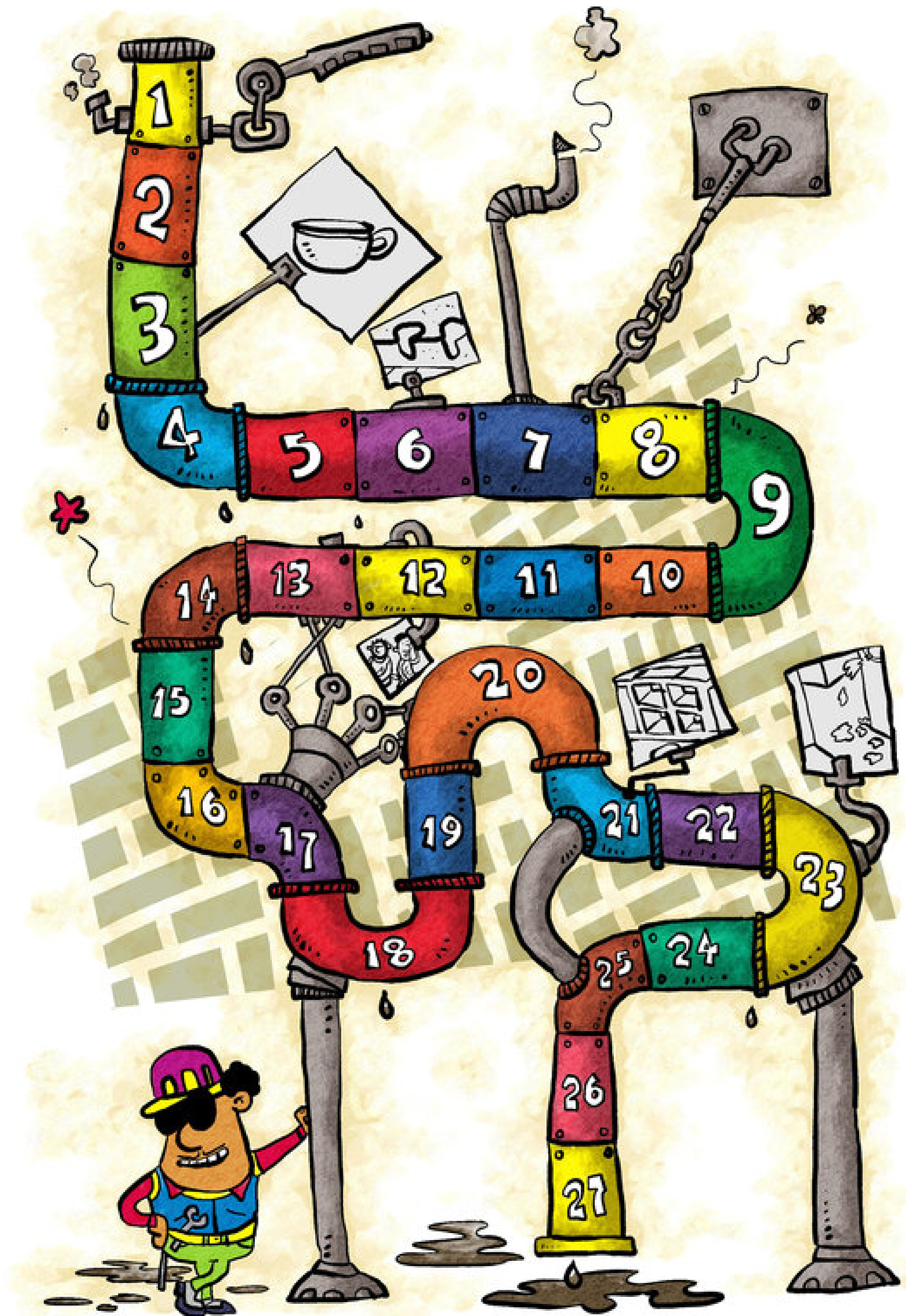
19 पर
ओह!' टॉयलेट' गंदा छोड़ि देलक!
3 खाना पाँछा जाऊ।



21 पर
बिना पानि के शौचालय:
अरे वाह! अहाँ तँ बिना पानिये शौचालयक उपयोग कय लेलौं।
छोट रास्ता सँ आगाँ बढि जाऊ।



23 पर
गंदा त ऊपर आबि गेल!
बाप रे! ई की भेलैक, अहाँ पर त गंदा उड़ि के पड़ि गेल!
अहाँ आब 1 अथवा 6 एलहि पर आब आगाँ बढ़ू।


1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27

Acknowledgements



Aripana Foundation, Darbhanga, works for the development of North Bihar with a focus on education. Through Project Lemonchoos, it strives to create quality children's literature in the underserved language Maithili. Aripana Foundation has coordinated the creation of this book with several individuals, in partnership with Pratham Books' Storyweaver.

Story Attribution:

This story: शौचालयक खिस्सा is translated by Kiran Choudhary . The © for this translation lies with Pratham Books, 2021. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'The Tale of the Toilet', by Veena Prasad . © Pratham Books , 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Shauchalayak Khissa' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. www.prathambooks.org.

Images Attributions:

Cover page: Different kinds of toilets, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Dogs & toilet, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Toilets in the Indus Valley civilization, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Pots and pans, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Toilets in the past, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Two men on a toilet , by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Queen's chamber pot, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: S-Shaped, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: S-shaped toilet, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Different types of toilets, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 11: Plane toilets, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Making a waterless toilet, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A man digging , by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Gardeners, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Chamber pot, Roman toilet, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Toilet board game, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Kicked out, waterless toilet, flying waste, by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Board Game (Toilets), by Greystroke © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.



शौचालयक खिस्सा

(Maithili)

एक नंबर जेबाक होए व दू नंबर, सदिखन इ एकटा बड़का काज छैक। मुदा अहाँ कहियो सोचलिऐ जे पुरना समय मे शौचालय केहन होइत छलैक? की अलग अलग देश मे एकर व्यवस्था अलग अलग तरीका सँ होइत छैक? आउ समय चक्र के एहि गाड़ी पर, हमरा लोकनि एकर अवलोकन करी।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

